“मातेश्वरी जी के पुण्य स्मृति दिवस पर क्लास में सुनाने के लिए जगदम्बा माँ की विशेषतायें तथा आलमाइटी के साथ मम्मा की रूहरिहान”

1) मम्मा का लौकिक नाम राधे था परन्तु जैसा नाम था वैसे राधे मुरली की मस्तानी थी, बाबा का एक एक शब्द बड़े प्यार से सुनती, समाती और उसे बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट कर सबको सुनाती इसलिए तो सरस्वती के हाथ में ज्ञान की सितार दिखाते हैं।

2) मम्मा को ड्रामा का पाठ बहुत पक्का था। उसको साक्षी हो करके देखने की इतनी अच्छी आदत मम्मा की थी, जो कोई भी दृश्य को देखते कभी हलचल में नहीं आई। सदा एकरस मुस्कराता हुआ चेहरा रहता। हम सबको भी सदा नथिंगन्यु का पाठ पढ़ाकर अचल-अडोल बना देती।

3) मम्मा के चेहरे पर कभी फिकर के चिन्ह नहीं देखे, कोई शरीर भी छोड़ दे या अपने ही शरीर में कुछ हुआ तो भी ज्यादा सोच नहीं, मम्मा साधारणता से नहीं रहती थी। मम्मा को सदा बहुत ऊंचे रूहानियत के नशे में देखा।

4) मम्मा को बाबा ने कहा तुम लक्ष्मी बनेगी, बस, एक बारी कहने से मम्मा की सूरत और सीरत बदल गई। गुणवान बनना है, गुण देखना है, गुण दान करना है - यह तीन बातों में मम्मा पक्की थी इसलिए उनकी उम्र भल कम थी लेकिन धारणा में बड़ी होने कारण उनको सब बड़े-छोटे दिल से मम्मा कहने लगे, गुणमूर्त मम्मा सबसे नम्बरवन चली गई।

5) क्लास में हाज़िर रहना - ये भी बाबा का फरमानबरदार बच्चा बनना है लेकिन न केवल रेग्युलर बल्कि पंक्चुअल होना है। ज़रा भी ऊपर नीचे न हो - ये हमें मम्मा ने सिखाया। मुरली और सवेरे का योग कभी मिस न हो, जिसको बाबा ने कहा गफलत न करो, जिसे ओना होता है वो कभी गफलत नहीं करता है।

6) मम्मा ने मर्यादाओं में एक्यूरेट रहना सिखाया। मम्मा ऐसी देही-अभिमानी स्थिति में रहती थी जो मम्मा से बाबा के गुण औ कर्म दिखाई देते थे। मम्मा में तीन विशेषतायें स्पष्ट दिखाई देती थी एक - रूहानियत, दूसरा स्वमान और तीसरा बाप से सर्व सम्बन्ध का स्नेह। तो हमें भी इन्हीं तीन गुणों को स्वयं में धारण करना है, इससे देह-अभिमान सहज खत्म हो जायेगा।

7) मम्मा के सिर पर अमृत का कलश शिवबाबा ने रखा, मम्मा उसे धारण कर सुनाने के निमित्त बनी। लेकिन मम्मा हमेशा कहती थी पिता-प्रसादे। बाप से मिला हुआ सुना रही हूँ। स्वयं की धारणा में जो है वह सुना रही हूँ, तभी वाणी में वह मधुरता, सच्चाई झलकती थी। जितनी हमारे में सत्यता, पवित्रता होगी उतनी मिठास आयेगी। जरा भी अपवित्रता है, मन में किसी के लिए ग्लानि है तो वाणी कडवी हो जायेगी।

8) मीठी माँ ने हम सब बच्चों को बड़े प्रेम से, इशारों से पालना दी। मम्मा का चित्त बिल्कुल साफ था। मम्मा हरेक बच्चे की बात दिल में ऐसे समा लेती थी जैसे कोई बात ही नहीं हुई। शिक्षायें देते हुए भी अन्दर समा लेना, समाने की शक्ति और प्यार से उसको चेंज

कर देना, यह बहुत बड़ी विशेषता मम्मा में देखी। मम्मा ने कभी दूसरों के अवगुण अन्दर चित्त पर नहीं रखे।

9) मम्मा सदा अपने स्वमान में रहती थी, उन्हें बीजरूप स्थिति बनाने का, सब संकल्प समेट लेने का, विस्तार में न जाने का नैचुरल आर्ट था। समेटना, समा लेना। कभी कोई बात में विस्तार में आया हुआ नहीं देखा, जिस कारण मम्मा की मुरली बहुत प्रभावशाली होती थी। वह मम्मा की दिव्यता, सत्यता की आकर्षण चेहरे पर भी थी।

10) मीठी ज्ञान चन्द्रमा मां की शीतलता को देख करके क्रोध करने वाली आत्मायें भी अपने आपमें शीतलता महसूस करने लग पड़ती थी। उनके चेहरे पर कभी थकावट की फीलिंग महसूस नहीं होती थी। वे सदा अथक होकर ईश्वरीय सेवा में हाँ जी करके बाबा के दिलतख्त पर बैठ गई।

11) इतनी आत्माओं के संग में आते हुए भी सभी की बातों को सुनते हुए भी खुद हर बात से न्यारी और प्यारी रही। कभी मम्मा की दृष्टि में किसी आत्मा के प्रति भी चेंज नहीं आई। वही मीठी दृष्टि हर किसी के प्रति रही। साथ-साथ उसकी कमियों पर सावधानी भी जरूर देती थी।

12) भल कैसे भी अवगुण वाली आत्मा हो लेकिन मम्मा के मुख पर कभी किसी भी आत्मा प्रति कोई अशुभ बोल नहीं निकलते थे, जिसका कोई फायदा ले लेवे। सदा शीतल स्वभाव और मीठे बोल उच्चारण करने वाली माँ का सदा यही लक्ष्य रहा कि सबके दुःख दूर करूँ। मम्मा को कभी किसी बात के कारण आवेश नहीं आया। उनके मुख से कभी तेज आवाज नहीं सुना। मम्मा शान्ति की अवतार, प्रेम की मूर्त थी।

13) गम्भीरता का गुण जो सर्वगुणों की खान है, उसका प्रत्यक्ष स्वरूप मम्मा में देखा। ममता वाली माँ नहीं, अच्छी माँ, टीचर, गुरु जैसी माँ। खुद के सबूत से सिखाने वाली माँ। गम्भीरता और धैर्यता के कारण मम्मा में समाने और समेटने की शक्ति थी। समाने और समेटने के कारण मम्मा सहनशीलता की मूर्त थी। सहनशीलता के गुण से सदा शीतल और शान्त थी।

14) बाबा जो भी सुनाता, मम्मा उसे इतने ध्यान से सुनती जैसे उसी समय एक-एक बात का स्वरूप बनती जा रही है इसलिए मम्मा सदा अचल अडोल, एकरस स्थिति में रही। मम्मा की स्थिति कभी नीचे ऊपर नहीं देखी। पुरुषार्थ भी कोई मेहनत वाला हार्ड नहीं किया। मम्मा के चेहरे से सदा प्युरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। इस प्युरिटी की पर्सनैलिटी के कारण ही जगदम्बा के रूप में मम्मा का इतना गायन और पूजन आज तक है।

15) अटल निश्चय किसको कहा जाता है, वह मम्मा की सूरत से देखा। कभी भी मम्मा ने श्रीमत में अपनी मत मिक्स नहीं की होगी। मेरा विचार यह है, मैं यह समझती हूँ... यह मम्मा ने कभी नहीं कहा। परन्तु बाबा ने यह कहा है, बाबा ने यह समझाया है। वह भी बताने में ऐसा रस जो हर एक को सहज समझ में आ जाए कि बाबा ने किस रहस्य से कहा है।

16) मम्मा की चलन कभी साधारण नहीं देखी, सदा रॉयल इसलिए मम्मा शिवबाबा की पोत्री, ब्रह्मा बाबा की बेटी बनने से सर्व की मनोकामना पूर्ण करने वाली कामधेनु माँ बन गई। मम्म ने अपने लिए कोई कामना नहीं रखी। बाप के दिये हुए खजाने से सदा सम्पन्न रही।

17) मम्मा ने कभी अपना शो नहीं किया। गुप्त पालना दी। अच्छी धारणा कराने में मदद की। आज दिन तक भी देश विदेश में बाबा के कई बच्चे हैं जिनका अनुभव है कि हम जैसे साकार मात-पिता की पालना में पल रहे हैं।

18) मम्मा ने हम बच्चों की पालना करने में इतना सर्वोत्तम श्रेष्ठ पार्ट बजाया, इस कारण गॉडेज ऑफ नॉलेज कहलाई, यह टाइटिल मम्मा के सिवाए किसी को नहीं मिल सकता। शिवबाबा की नॉलेज को इतना धारण किया है तब विद्या की देवी बनी है, इसलिए विद्या धारण करने के लिए सरस्वती को याद करते हैं।

19) मम्मा को स्वमान, स्वधर्म में रहने का सदा नशा रहा। स्वधर्म हमारा शान्त है, उसमें मम्मा शक्ति अवतार रही। बाबा ने जो कहा मम्मा की बुद्धि ने माना। मम्मा ने कभी नहीं कहा होगा - मैंने यह किया, सदा बाबा के तरफ इशारा किया। मैं बेटी हूँ, मात-पिता वह है, मम्मा इतनी निरहंकारी थी।

20) मम्मा है ब्रह्मा की बेटी। संबंध में इतनी स्वच्छता, पवित्रता की शक्ति थी जो जगदम्बा बन गई। और साथ-साथ मम्मा को भविष्य का, हम सो का ऐसा नशा था जो नैन चैन से, चेहरे से वह नशा दिखाई देता था जैसे सचमुच श्रीलक्ष्मी है। जैसे वह संस्कारों में भर गया - किसकी हूँ और भविष्य मेरा क्या है।

21) मम्मा सदा एकान्त में रहती थी, रोज़ 2 बजे सवेरे उठकर बाबा की यादों में एकान्त में चली जाती, इसी पुरुषार्थ से मम्मा का सम्पूर्ण स्वरूप कई बार दिखाई पड़ता था।

22) मम्मा नम्बरवन आज्ञाकारी रही, मम्मा ने बाबा के हर इशारे को समझा और हम बच्चों को बहुत सरल करके स्पष्ट करके सुनाया। मम्मा के महावाक्यों में एक-एक बात का स्पष्टीकरण है। बाबा के साथ लगन कैसी हो, वह भी मम्मा की सूरत से देखा।

23) मम्मा हमेशा कहती थी कि शक्ति जमा करने में आप लोग कितनी मेहनत करते हो और फालतू खर्च कितनी जल्दी कर लेते हो। फालतू बातों में शक्ति खर्च करके फिर उदास, कमजोर हो जाते हो। कमाई करने में इतना टाइम नहीं देते लेकिन सारा दिन खर्चा ही खर्चा, फिर देवाला हो जाता और जब कोई बात सामने आती है तो कहते बहुत मुश्किल है क्योंकि ताकत नहीं है।

24) मम्मा के दो स्लोगन बहुत याद रहते हैं - 1- मम्मा सदा कहती थी -"हर घड़ी हमारी अन्तिम घड़ी है"। 2- हुक्मी हुक्म चला रहा है। यह दो मन्त्र मम्मा हमेशा याद रखती और सबको याद दिलाती। इसी मन्त्र से हम सहज नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हो जायेंगे, किन्हीं झंझटों में नहीं जायेंगे। और अपनी बुद्धि को सब बातों से फ्री रख बाबा की आशाओं को पूर्ण कर सकेंगे।